पंचम अध्याय

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय : पंचम

शोध सरांश व सुझाव

प्रस्तावना:- यह अध्याय सम्पूर्ण अध्ययन का संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन में विद्यार्थियों के मानचित्र संबंधी समस्या के लिए एक शिक्षण विधि का प्रायोगिक परीक्षण किया गया है। इसमें मानचित्र अंकन मुख्य बिन्दु है। कौशलों की पहचान, अधिगमकर्त्ता प्रपत्र का निर्माण क्रियान्वयन तथा प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

"आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों में मानचित्र संबंधी समस्या पर अधिगमकर्त्ता पारस्परिक क्रिया विधि का प्रभाव" शोध प्रबंध प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध के उद्देश्य :

1) मानचित्र संबंधी समस्या की पहचान करना।

2) समस्या कौशल पर अधिगमकर्त्ता पारस्परिक क्रिया विधि बनाना।

3) अधिगमकर्त्ता पारस्परिक क्रिया विधि कार्यक्रम का अनुप्रयोग।

4) अनुप्रयोग के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

अनुप्रयोग प्रभाव के अध्ययन हेतु परिकल्पना का निर्माण किया गया।

1) पश्च-परीक्षण के बाद कौशल-I "अक्षांश-देशांतर के ज्ञान" में प्रायोगिक समूह व नियंत्रित समूह में अंतर नहीं है।

2) पश्च-परीक्षण के बाद कौशल - II "दिशा संबंधी ज्ञान" में अंतर नहीं है।

3) पश्च-परीक्षण के बाद कौशल - III "मापनी संबंधी ज्ञान" में प्रायोगिक समूह व नियंत्रित समूह में अन्तर नहीं है।

4) पश्च-परीक्षण के बाद प्रायोगिक समूह व नियंत्रित समूह में अंतर नहीं है।

चर :- अध्ययन में चर इस प्रकार लिये गये हैं;

स्वतंत्र चर :- अधिगमकर्ता पारस्परिक क्रियाविधि।

आश्रित चर :- मानचित्र - परीक्षण में उपलब्धि

शोध अभिकल्प :-यह शोध प्रयोगात्मक शोध है। इसमें दो विद्यालय में पूर्व-परीक्षण के बाद प्रयोगात्मक शिक्षण व परम्परागत् पश्च-परीक्षण किया गया तथा अधिगमकर्त्ता पारस्परिक क्रिया विधि के प्रभाव सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात किया गया।

प्रतिचयन : दो विद्यालय का चयन शिक्षण सुविधा के आधार पर तथा विद्यालय के लिए कुछ समानता निर्धारित करते हुए किया गया।

प्रायोगिक समूह व नियंत्रित समूह पूर्व-परीक्षण के बाद बनाया गया।

विद्यालय	संख्या	माध्य	समूह
भारत-भारती उ.मा.वि.	26	9.8462	नियंत्रित समूह
सेंट विसेंट पैलोटी विद्यालय	26	8.7500	प्रायोगिक समूह

उपकरण :-पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षण का उपयोग किया गया। यह स्वनिर्मित परीक्षण-पत्र है। प्रश्नों की संख्या कौशल के आधार पर किया गया। अंको का भी निर्धारण प्रश्नों के अनुसार किया गया।

शिक्षण हेतु अधिगमकर्त्ता पारस्परिक क्रिया प्रपत्र स्वनिर्मित है।

आंकडो का विश्लेषण :- आंकडो का विश्लेषण माध्य मानक-विचलन, टी-परीक्षण द्वारा किया गया।

टी- परीक्षण द्वारा पूर्व परीक्षण व पश्च-परीक्षण को परिकल्पना के आधार पर परिक्षित किया गया।

मुख्य परिणाम :-

(1) पूर्व-परीक्षण में दोनों विद्यालय की मानचित्र संबंधी उपलब्धि समान पाई गई।

(2) पश्च-परीक्षण के सभी कौशलों को अलग-अलग परीक्षण किया जिसमें **कौशल** - I "अक्षांश-देशांतर के ज्ञान" में शिक्षण प्रभावकारी नहीं पाया गया।

(3) **कौशल** - II "दिशा संबंधी ज्ञान" में शिक्षण-विधि प्रभावकारी नहीं पायी गई।

(4) **कौशल** - III "मापनी संबंधी ज्ञान" में शिक्षण विधि प्रभावकारी पायी गई।

(5) अधिगमकर्त्ता पारस्परिक क्रिया-विधि द्वारा शिक्षण के पश्चात् प्रायोगिक समूह व नियंत्रित समूह में अंतर पाया गया, अर्थात् मानचित्र संबंधी समस्या पर यह शिक्षण विधि प्रभावकारी सिद्ध हुई।

शोध में शिक्षण - विधि पूर्ण रूप से प्रभावकारी सिद्ध होती है किंतु मानचित्र संबंधी दो कौशलों में इसका प्रभाव नहीं हुआ है। केवल "मापनी संबंधी ज्ञान" सफलता प्राप्त हुई है।

भविष्य के लिए शोध सुझाव

- अन्य विषय बिन्दु पर अधिगमकर्त्ता पारस्परिक क्रिया विधि का प्रभाव पर शोध किया जा सकता है।
- शिक्षकों की भूगोल पढ़ाने की शिक्षण विधियों पर शोध किया जा सकता है।
- पाठ्यक्रम विश्लेषण किया जा सकता है।
- भूगोल - पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण किया जा सकता है।
- मीडिया/कम्प्यूटर/टी.वी. चैनल के साथ भूगोल विषय का संबंध व अध्यापन का अध्ययन किया जा सकता है।